NEWS CLIPPING: 28.08.2020

THE TRIBUNE

ONLINE COURSE CONCLUDES AT YMCA

Faridabad: A week-long online value-added course on 'Cloud computing' jointly conducted by the Department of Computer Engineering and Department of Computer Applications of the JC Bose University of Science and Technology, YMCA, has concluded here. Sponsored by TEQIP-III, it was attended by 125 participants consisting of post-graduate students, research scholars and faculty members. "Objective of the course was to provide comprehensive and in-depth knowledge of cloud computing concepts, technologies, architecture and applications in diverse domains," said VC Dinesh. He said such courses would not only be helpful in gaining more knowledge and skills of any subject, but also are the need of the hour as manual classroom teaching was on hold these days. He asked the department to conduct such courses on emerging technologies too. Keynote speaker Sachin Gaur, founder and CEO of MixORG Consulting Services Private Limited, emphasised on development of new methods which could enable privacy preserving methods of doing computing. Another resource person, Amey Tambe, director, Alka Technologies, encouraged the participants to use newly learnt concepts in their own research and contribute to make the nation more powerful.

The Tribune Fri, 28 August 2020 https://epaper.tribuneinc

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

PUNJAB KESARI

तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला

तालाबों के जीर्णोद्धार में मदद करेंगे तकनीकी संस्थान

फरीदाबाद, 27 अगस्त (पूजा शर्मा): जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने हरियाणा तकनीकी शिक्षा विभाग के सहयोग से तलाबों की आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया।

कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने किया और प्रतिभागियों को संबोधित किया। गाँवों में तालाबों को पानी का प्रमुख स्रोत बताते हुए उन्होंने राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के विकास और जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया और ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य सरकार द्वारा की गई पहल की सराहना की।

कार्यशाला में यह बताया गया कि वर्तमान में हरियाणा में 18 हजार तालाब हैं, जो कई तकनीकी और सामाजिक कारणों से सीमित उपयोग में हैं। इस कार्यशाला का उद्देश्य इन तालाबों की उपयोगिता बढ़ाने के लिए राज्य तकनीकी संस्थानों के संकाय और विद्यार्थियों के माध्यम से एक तंत्र विकसित करना या समाधान प्राप्त करना था। कार्यशाला के दौरान विभिन्न समाधान प्रदान किए गए।

कुलपति प्रो. दिनेश कुमार सिविल इंजीनियरिंग विभाग द्वारा विकसित ट्रेडिल पंप की जानकारी लेते हुए।(छाया: एस शर्मा)

जे.सी. बोस विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एम.एल. अग्रवाल ने इस अवसर पर तालाबों का उपयोग करके सिंचाई के लिए अभिनव जल आपूर्ति प्रणाली ट्रेडिल पंप का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया। यह तकनीक किसी टैंक या तालाब में संचयित पानी का विभिन्न सुविधाओं में उपयोग के लिए मदद करती है। इस प्रणाली में ट्रेडिल पंप को पैर से संचालित किया जा सकता है और इसे आसानी से बिना बिजली के चलाया जा सकता है। स्मार्ट सिंचाई प्रणाली विकसित करने के लिए इसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) की सहायता से मोबाइल के माध्यम से मॉनिटर का विकल्प भी दिया गया है। वर्षा जल के भंडारण और उपयोग की इस प्रणाली के लिए किसी बिजली से संचालित ऊर्जा की आवश्यकता नहीं होती है। इसका पंपिंग तंत्र जिम में होने वाले अभ्यास से मिलता जुलता है। यह प्रणाली ऊर्जा कुशल, पर्यावरण के अनुकूल और सस्ती है। यह एक तालाब से प्रति घंटे 3000 लीटर पानी उठाने के लिए उपयुक्त है। इस पंप को तालाब से 5 से 50 मीटर की दूरी पर स्थापित किया जा सकता है और यह 0.5 किमी के दायरे में पानी की आपूर्ति कर सकता है।

जेसी बोस विश्वविद्यालय के एक अन्य संकाय डॉ. विशाल पुरी ने तालाब में पानी की गहराई खोजने के लिए इको-साउंड उपकरण का प्रदर्शन किया। यह पानी की गहराई से प्रत्यक्ष डिजिटल रीडिंग देता है। डॉ. कृष्ण वर्मा ने कंप्यूटर एडेड टेक्नोलॉजी का उपयोग करके पानी की मात्रा खोजने की विधि का प्रदर्शन किया। योगेश कुमार मोर्या और सत्यम कुमार ने कंप्यूटर एडेड ऑटोकैड सॉफ्टवेयर का उपयोग करके तालाब के आर्किटेक्चर ड्राइंग बनाने की प्रक्रिया के बारे में बताया। सिविल इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि रखने वाले बहुतकनीकी संस्थानों, कॉलेजों और तकनीकी विश्वविद्यालयों के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने इस प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Fri,28 August 2020
Edition: faridabad kesari, Page no. 1

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

PUNJAB KESARI

मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी पर आधारित स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगा जेसी बोस विश्वविद्यालय

जिले में लापता बच्चों की खोज होगी आसान

फरीदाबाद, 27 अगस्त (महावीर गोयल): जे.सी. बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए, फरीदाबाद ने सामाजिक सरोकार के लिए अपनी प्रौद्योगिकी विशेषज्ञता साझा करने की दिशा में कदम उठाया है। विश्वविद्यालय मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी का उपयोग कर लापता बच्चों का पता लगाने की स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगा।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग को इस शोध परियोजना के लिए स्वीकृति तथा फंड आवंटित किया है। कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग से प्रो. आशुतोष दीक्षित शोध परियोजना में प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर होंगे, जबकि डॉ. प्रीति सेठी और पुनीत गर्ग इस प्रोजेक्ट में को-प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर होंगे। इस परियोजना की अवधि तीन वर्ष है।

कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने समाज से जुड़े गंभीर विषय पर विभाग द्वारा शोध परियोजना के लिए की गई पहल की सराहना की है और कहा है कि बच्चों की गुमशुदगी समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक हैं और यह महानगरीय शहरों में ज्यादा है जहां माता-पिता दोनों नौकरीपेशा हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस पहल से विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को मशीन लर्निंग जैसी उभरती हुई तकनीक पर काम करने और समाज को समाधान प्रदान करने का अवसर मिलेगा। राज्य सरकार के उभरते अनुसंधान विश्वविद्यालय से समाज के लिए ऐसे समाधान अपेक्षित है। प्रस्तावित साफ्टवेयर से निश्चित रूप से पुलिस अधिकारियों की क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलेगी और लापता बच्चों को खोजने के मामले में तेजी से काम होगा।

शोध परियोजना को एआईसीटीई ने दी मंजूरी

देश में लापता बच्चों के सर्वेक्षण के आकड़ों का उल्लेख करते हुए परियोजना में प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर प्रो. आशुतोष दीक्षित ने कहा कि हर दिन 174 बच्चे, जिसमें अधिकतर 6 वर्ष की आयु से कम उम्र के होते है, विभिन्न कारणों से लापता हो जाते है। लेकिन जब ऐसे लापता बच्चे पुलिस को मिलते है तो वे एक घबराहट और डर की स्थिति में होते हैं और स्पष्ट रूप से कुछ बता पाने में सक्षम नहीं होते क्योंकि वे डर कारण हकलाने लगते हैं। इसलिए, ऐसे बच्चों की मदद के लिए स्पीच क्लैरिफिकेशन सॉफ्टवेयर की तत्काल आवश्यकता है जो इन डरे हुए बच्चों को अपना सही विवरण बताने में मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित सॉफ्टवेयर से ऐसे बच्चे अपना सही विवरण देने में सक्षम होंगे, जिससे पुलिस को उनके अभिभावकों को खोजने में आसानी होगी।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Fri,28 August 2020
Edition: faridabad kesari, Page no. 4

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

HINDUSTAN

लापता बच्चों की स्पीच तकनीक से खोज

शोध

फरीदाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (वाईएमसीए) मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी का उपयोग कर लापता बच्चों का पता लगाने की स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगा। इसके लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग को इस परियोजना पर शोध की अनुमति दी है। इस तकनीक के जरिये गुमशुदा बच्चों की खोज की जा सकेगी।

शोध कार्य को तीन वर्षों में पूरा करना है। इसकी जिम्मेदारी कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. आशुतोष दीक्षित, डॉ. प्रीति सेठी और पुनीत गर्ग को सौंपी गई है। बच्चों की गुमशुदगी एक गंभीर समस्या है। इस शोध के माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को मशीन लर्निंग (जैसी उभरती हुई तकनीक) पर काम करने का मौका मिलेगा।

मालूम हो कि शोध के बाद पुलिस अधिकारियों की क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलेगी और लापता बच्चों को खोजने के मामले में तेजी आ सकती है। परियोजना में प्रिंसिपल इंवेस्टिगेटर प्रो. आशुतोष दीक्षित ने बताया कि देश में रोजाना 174 बच्चे खो जाते हैं।

इसमें से अधिकतर छह वर्ष से कम आयु के हैं। उनका कहना है कि ऐसे लापता बच्चे जब पुलिस को मिलते हैं तो वह घबराहट और डर की स्थिति में होते हैं। बच्चे अपने संबंध में स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं बता पाते है। क्योंकि वह डर के कारण हकलाने लगते हैं। इसलिए, ऐसे बच्चों की मदद के लिए स्पीच क्लैरिफिकेशन सॉफ्टवेयर का खोज किया जा रहा है।

सहमे बच्चे अपना विवरण आसानी से दे सकेंगे

डरे हुए बच्चे इस तकनीक की मदद से अपना सही विवरण बता सकेंगे। प्रस्तावित सॉफ्टवेयर से ऐसे बच्चे अपना सही विवरण देने में सक्षम होंगे, जिससे पुलिस को उनके अभिभावकों को खोजने में आसानी होगी। वाईएमसीए के कुलपति दिनेश कुमार ने बताया कि शोध के लिए हरी झंडी मिल गई है। शोध तीन वर्षों में पूरा करना है। इसके बाद खोए बच्चों को खोजने में सहूलियत हो जाएगी।

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

HINDUSTAN

आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर कार्यशाला का आयोजन

फरीदाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (वाईएमसीए) में तकनीकी शिक्षा विभाग के माध्यम से तालाबों की आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर दो दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें प्रदेश के कई तकनीकी संस्थानों के प्रोफेसर ने हिस्सा लिया। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने किया।

उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के विकास और जीर्णोद्धार के विषय में बताया। उन्होंने बताया कि प्रदेश में करीब 18 हजार तालाब हैं, जो विभिन्न कारणों से सीमित उपयोग में हैं। कार्याशाला का उद्देश्य तालाबों की उपयोगिता बढ़ाने और तकनीकी संस्थानों के माध्यम से एक उपकरण विकसित करना कर उसका समाधान निकालना है। सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एमएल अग्रवाल ने जल आपूर्ति प्रणाली ट्रेडिल पंप के विषय में जानकारी दी। इस ट्रेडिल पंप को पैर से चलाया जा सकता है और इसे बगैर बिजली के भी चलाया जा सकता है। स्मार्ट सिंचाई प्रणाली विकसित करने के लिए इसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) की सहायता से मोबाइल के माध्यम से मॉनिटर करने का भी विकल्प है।

इको-साउंड उपकरण की दी जानकारीः वक्ताओं का कहना था कि पंपिंग तंत्र जिम में होने वाले अभ्यास से मिलता जुलता है। यह प्रणाली ऊर्जा कुशल, पर्यावरण के अनुकूल और सस्ती है। यह मशीन प्रति घंटे 3 हजार लीटर पानी उठा सकती है। इस पंप को तालाब से 5 से 50 मीटर की दूरी पर रखा जा सकता है।

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

THE PIONEER

लापता बच्चों की खोज को आसान बनायेगा जेसी बोस

फरीदाबाद। वाईएमसीए स्थित जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने सामाजिक सरोकार के लिए अपनी प्रौद्योगिकी विशेषज्ञता सांझा करने की दिशा में कदम उठाया है। विश्वविद्यालय मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी का उपयोग कर लापता बच्चों का पता लगाने की स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगा। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग को इस शोध परियोजना के लिए स्वीकृति तथा फंड आवंटित किया है। कम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग से प्रो. आशुतोष दीक्षित शोध परियोजना में प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर होंगे, जबकि डॉ. प्रीति सेठी और पुनीत गर्ग इस प्रोजेक्ट में को-प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर होंगे। इस परियोजना की अवधि तीन वर्ष है। कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने समाज से जुड़े गंभीर विषय पर विभाग द्वारा शोध परियोजना के लिए की गई पहल की सराहना की है और कहा है कि बच्चों की गुमशुदगी समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक हैं और यह महानगरीय शहरों में ज्यादा है जहां माता-पिता दोनों नौकरीपेशा हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस पहल से विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को मशीन लर्निंग जैसी उभरती हुई तकनीक पर काम करने और समाज को समाधान प्रदान करने का अवसर मिलेगा। राज्य सरकार के उभरते अनुसंधान विश्वविद्यालय से समाज के लिए ऐसे समाधान अपेक्षित है।

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

THE PIONEER

तालाबों के जीर्णोद्धार में मदद करेंगे तकनीकी संस्थान

राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

वाईएमसीए स्थित जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने हरियाणा तकनीकी शिक्षा विभाग के सहयोग से तलाबों की आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति प्रो दिनेश कुमार ने किया और प्रतिभागियों को संबोधित किया। गांवों में तालाबों को पानी का प्रमुख स्रोत बताते हुए उन्होंने राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के विकास और जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया और ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य सरकार द्वारा की गई पहल की सराहना की। कार्यशाला में यह बताया गया कि वर्तमान में हरियाणा में 18 हजार तालाब हैं, जो कई तकनीकी और सामाजिक कारणों से सीमित उपयोग में हैं। इस कार्यशाला का उद्देश्य इन तालाबों की उपयोगिता बढ़ाने के लिए राज्य तकनीकी संस्थानों के संकाय और विद्यार्थियों के माध्यम से एक तंत्र विकसित करना या समाधान प्राप्त करना था।

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

DAINIK JAGRAN

स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगी जेसी बोस यूनिवर्सिटी

जासं, फरीदाबाद : जेसी बोस विश्वविद्यालय मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी के उपयोग से लापता बच्चों का पता लगाने की स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगा। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने विश्वविद्यालय के कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभाग को इस शोध परियोजना के लिए स्वीकृति तथा फंड आवंटित किया है। कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभाग से प्रो. आशुतोष दीक्षित शोध परियोजना में प्रधान अन्वेषक होंगे, जबकि डॉ. प्रीति सेठी व पुनीत गर्ग इस प्रोजेक्ट में सह प्रधान अन्वेषक होंगे। इस परियोजना की अवधि तीन वर्ष है। कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने कहा कि बच्चों की गुमशुदगी समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक है। यह महानगरीय शहरों में ज्यादा है, जहां माता-पिता दोनों नौकरीपेशा हैं। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस पहल से विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं शोधार्थियों को मशीन लर्निंग जैसी उभरती हुई तकनीक पर काम करने व समाज को समाधान प्रदान करने का अवसर मिलेगा। राज्य सरकार के उभरते अनुसंधान विश्वविद्यालय से समाज के लिए ऐसे समाधान अपेक्षित है। प्रस्तावित सॉफ्टवेयर से निश्चित रूप से पुलिस अधिकारियों की क्षमता को बढ़ाने में मदद मिलेगी। प्रो. आशुतोष दीक्षित ने कहा कि लापता बच्चे जब पुलिस को मिलते हैं, तो वे डर की वजह से स्पष्ट रूप से कुछ बता पाने में सक्षम नहीं होते। ऐसे में बच्चों की मदद के लिए स्पीच क्लैरिफिकेशन सॉफ्टवेयर की तत्काल आवश्यकता है, जो इन डरे हुए बच्चों को अपना सही विवरण बताने में मदद कर सकता है।

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

AMAR UJALA

तालाबों के सुधार और जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया

फरीदाबाद। जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाईएमसीए तालाबों की आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। हरियाणा तकनीकी शिक्षा विभाग के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने किया और प्रतिभागियों को संबोधित किया। गांवों में तालाबों को पानी का प्रमुख स्रोत बताते हुए उन्होंने राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के विकास और जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया। इसके साथ ही उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य सरकार द्वारा की गई पहल की सराहना की। बताया गया कि वर्तमान में हरियाणा में 18 हजार तालाब हैं। जो कई तकनीकी और सामाजिक कारणों से सीमित उपयोग में हैं। विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एमएल अग्रवाल ने इस अवसर पर तालाबों का उपयोग करके सिंचाई के लिए अभिनव जल आपूर्ति प्रणाली.ट्रेडिल पंप का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया। ब्यूरो

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

DAINIK BHASKAR

गांवों में तालाबों के जीर्णोद्धार में मदद करेंगे तकनीकी संस्थान

राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिनी प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने हरियाणा तकनीकी शिक्षा विभाग के सहयोग से तालाबों की आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए दो दिनी ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें 200 पत्तिभागियों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन कुलपति प्रो. दिनेश कुमार ने किया। उन्होंने गांवों में तालाबों को पानी का प्रमुख स्रोत बताते हुए राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के विकास और जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य सरकार की पहल की सराहना की।

कार्यशाला में बताया गया कि वर्तमान में हरियाणा में 18 हजार तालाब हैं। जो कई तकनीकी और सामाजिक कारणों से सीमित उपयोग में हैं। इस कार्यशाला का उद्देश्य इन तालाबों की उपयोगिता बढ़ाने के लिए राज्य तकनीकी संस्थानों के संकाय और विद्यार्थियों के माध्यम से एक तंत्र विकसित करना या समाधान प्राप्त करना था। कार्यशाला के दौरान विभिन्न समाधान प्रदान किए गए। जेसी बोस विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष डॉ. एमएल अग्रवाल ने इस अवसर पर तालाबों का उपयोग कर सिंचाई के लिए अभिनव जलापूर्ति प्रणाली ट्रेडिल पंप का प्रदर्शन किया। यह तकनीक किसी टैंक या तालाब में संचयित पानी का विभिन्न सुविधाओं में उपयोग के लिए मदद करती है। इस प्रणाली में ट्रेडिल पंप को पैर से संचालित किया जा सकता है और इसे आसानी से बिना बिजली के चलाया जा सकता है।

J. C. Bose University of Science and Technology, YMCA, Faridabad
(formerly YMCA University of Science and Technology)
A State Govt. University established wide State Legislative Act. No. 21 of 2009
SECTOR-6, FARIDABAD, HARYANA-121006
Ph. 129-2310127 | email:proymcaust@gmail.com | web: www.jcboseust.ac.in

GOLDEN JUBILEE YEAR
(1969-2019)

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

NAVBHARAT TIMES

सॉफ्टवेयर की मदद से अपनों से मिल सकेंगे लापता बच्चे

एनबीटी न्यूज, फरीदाबाद : जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय वाईएमसीए ने सामाजिक सरोकार के लिए अपनी प्रौद्योगिकी विशेषज्ञता साझा करने की दिशा में कदम उठाया है। विश्वविद्यालय मशीन लर्निंग टेक्नोलॉजी का उपयोग कर लापता बच्चों का पता लगाने की स्पीच क्लैरिफिकेशन तकनीक विकसित करेगा। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् ने विश्वविद्यालय के कंम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग को इस शोध परियोजना के लिए स्वीकृति तथा फंड आवंटित किया है। कंम्प्यूटर इंजीनियरिंग विभाग से प्रो. आशुतोष दीक्षित शोध परियोजना में प्रिंसिपल इंवेस्टिगेटर होंगे, जबकि डॉ. प्रीति सेठी और पुनीत गर्ग इस प्रॉजेक्ट में को-प्रिंसिपल इन्वेस्टिगेटर होंगे। इस परियोजना की अवधि 3 वर्ष है। परियोजना के प्रिंसिपल इंवेस्टिगेटर प्रो. आशुतोष दीक्षित ने कहा कि हर दिन 174 बच्चे लापता होते हैं, जिसमें अधिकतर 6 वर्ष की आयु से कम उम्र के होते हैं। घबराहट और डर के कारण वह हकलाने लगते हैं। इसलिए, ऐसे बच्चों की मदद के लिए स्पीच क्लैरिफिकेशन सॉफ्टवेयर की तत्काल आवश्यकता है। यह बच्चों को अपना सही विवरण बताने में मदद कर सकता है।

स्पीच क्लैरिफिकेशन सॉफ्टवेयर के जरिए हकलाने वाले बच्चे बता सकेंगे अपने बारे में

NEWS CLIPPING: 28.08.2020

NAVBHARAT TIMES

गांवों में तालाबों को दुरुस्त करेंगे तकनीकी संस्थान

■ एनबीटी न्यूज, फरीदाबादः जेसी बोस विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय वाईएमसीए ने हरियाणा तकनीकी शिक्षा विभाग के सहयोग से गावों के तालाबों की आर्किटेक्चरल ड्राइंग पर राज्य के तकनीकी संस्थानों के लिए 2 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन कुलपति दिनेश कुमार ने किया। गांवों में तालाबों को पानी का प्रमुख स्रोत बताते हुए उन्होंने राज्य में ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के विकास और जीर्णोद्धार की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में तालाबों के जीर्णोद्धार के लिए राज्य सरकार द्वारा की गई पहल की सराहना की। कार्यशाला में यह बताया गया कि वर्तमान में हरियाणा में 18 हजार तालाब हैं, जो कई तकनीकी और सामाजिक कारणों से सीमित उपयोग में हैं।